शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ४१ : नई दिल्ली : १३-१९ जनवरी २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बाड़मेर संभाग में विचरण कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्यप्रवर बालोतरा के निकट पधार गए हैं। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार १८ जनवरी को असाडा पधारेंगे। यहां वर्धमान महोत्सव का समायोजन है। १ फरवरी को टापरा पधार जाने की संभावना है। यहां मर्यादा महोत्सव की तैयारियां द्रुत गति से चल रही हैं।

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-५

प्रश्न-३५ :- सामायिक क्यों करनी चाहिए? क्या बिना सामायिक के समता की साधना नहीं हो सकती?

उत्तर :- बिना सामायिक के जितनी समता की साधना हो, वह अच्छी है, परन्तु सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान होता है, यह सामायिक का विशेष लाभ है। सावद्य योग का प्रत्याख्यान बिना सामायिक के होने वाली समता या साधना में नहीं हो सकता। सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान होने पर उसके साथ कोई शुभयोग की प्रवृत्ति भी की जाए, स्वाध्याय और जप आदि किया जाए तो उसे संवर के लाभ के साथ-साथ निर्जरा का अतिरिक्त लाभ भी हो जाता है। इसलिए सामायिक की साधना और सामान्य रूप से होने वाली समता की साधना में बड़ा अन्तर है।

प्रश्न-३६ :- निर्जरा के बारह भेदों में सर्वोत्तम कौन-सा है?

उत्तर :- बारह ही भेद अच्छे हैं। सर्वोत्तम किसी को सापेक्ष रूप में कहा जा सकता है। आगम में ब्रह्मचर्य को तपों में उत्तम कहा गया है। वैसे प्राचीन साहित्य में कहा गया है कि स्वाध्याय सर्वोत्तम तप है, जिनोपदिष्ट बारह प्रकार की निर्जरा में स्वाध्याय के समान कोई तप नहीं है। उससे एक आलोक मिलता है। अच्छे ग्रंथों का स्वाध्याय करते-करते वैराग्य भाव को पुष्ट होने का मौका भी मिलता है। वैराग्य भाव साधना का मूल आधार है। इस संदर्भ में स्वाध्याय की महत्ता स्पष्ट है। अतः सापेक्ष रूप में ही किसी को सर्वोत्तम कहा जा सकता है।

प्रश्न-३७ :- निर्जरा के साथ पुण्य का बंध निश्चित रूप से होता है फिर कर्मों की पूर्ण निर्जरा कैसे हो सकती है?

उत्तर :- निर्जरा के साथ में पुण्य का बंध होता है, यह एक सामान्य नियम है, परन्तु अन्तिम जो निर्जरा होती है, यानी चौदहवें गुणस्थान में जो कर्म कटते हैं, उनके साथ कोई पुण्य का बंध नहीं होता। ऐसे में संपूर्णतया आत्मा कर्ममुक्त हो जाती है।

प्रश्न-३८ :- क्या अशुभ कर्मों को शुभ कर्मों में परिवर्तित किया जा सकता है? यदि हां, तो कैसे?

उत्तर :- अशुभ कर्म का शुभ कर्म और शुभ कर्म का अशुभ कर्म में परिवर्तन हो सकता है। जैन कर्मवाद में संक्रमण का सिद्धान्त आता है कि शुभ प्रवृत्ति के द्वारा पाप को पुण्य में और अशुभ प्रवृत्ति के द्वारा पुण्य को पाप में परिवर्तित किया जा सकता है।

प्रश्न-३९ :- किसी दुर्घटना में एक साथ सैकड़ों-हजारों व्यक्ति दिवंगत हो जाते हैं। क्या उन सबका आयुष्य कर्म उतना ही होता है?

उत्तर :- ऐसा कोई नियम नहीं है। अकालमृत्यु भी हो सकती है। आयुष्य वैसे लंबा बंधा हुआ था

और वह दुर्घटना नहीं होती तो कोई आदमी नब्बे वर्ष जी लेता, लेकिन दुर्घटना हो गई तो उस आयुष्य को वह बहुत कम समय में भोग लेता है और वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इसको सामान्य भाषा में अकाल मृत्यु कहा जाता है। किसी का आयुष्य उतना भी हो सकता है और किसी की अकालमृत्यु भी हो सकती है।

प्रश्न-४० :- जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फिर मानव जीवन को दुर्लभ क्यों कहा जाता है?

उत्तर :- जनसंख्या कितनी बढ़ गई है? दुनिया की आबादी सात अरब के आसपास मान लें। एक प्याज है, उसके सुई की नोक जितने अंश में अनंत जीव हैं, इस हिसाब से देखें तो एक प्याज में कितने जीव हो जाएंगे? उन जीवों की तुलना में देखें तो सात अरब की संख्या बहुत कम है। समुद्र के सामने बूंद जितनी भी संभवतः नहीं होगी। इसलिए आबादी बढ़ी है या बढ़ रही है, इस बात को ध्यान में रखें तो भी अनंत जीवों की तुलना में तो अभी वह बहुत कम है। नरक में और स्वर्ग में कितने जीव हैं? उन नरक और स्वर्ग के जीवों की तुलना में मनुष्य बहुत थोड़े हैं और सिद्धान्तानुसार गर्भज मनुष्य सबसे कम संख्या में हैं। इसलिए मानव जीवन दुर्लभ है।

प्रश्न-४१ :- किसके व्यक्तित्व ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया?

उत्तर :- अब यह तो कहना कठिन है कि किसके व्यक्तित्व ने सर्वाधिक प्रभावित किया। हम तो बस अध्यात्म साधना में विश्वास करने वाले और नैतिक मूल्यों के साधक हैं। किसने प्रभावित किया, यह कुछ कहना कठिन है।

प्रश्न-४२ :- सामाजिक संस्थाओं में कलह की स्थितियां यदा-कदा सुनने, देखने को मिलती हैं, क्या इसका कोई समाधान है?

उत्तर :- बताएं कि आपको किस संस्था में कलह देखने को मिल रहा है? अगर तेरापंथी सभा में कोई कलह है, किसी ट्रस्ट में कोई कलह है तो जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा से संपर्क किया जा सकता है। तेरापंथ महिला मंडल की किसी शाखा में कलह है तो अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से संपर्क किया जा सकता है। तेयुप की किसी शाखा में कलह है तो अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से संपर्क किया जा सकता है। केन्द्रीय संस्थाओं में परस्पर कोई कलह है तो तेरापंथ विकास परिषद से संपर्क कर लें। इसके बावजूद भी कोई समाधान न हो रहा हो तो हमसे सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रश्न-४२ :- तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वियों की संख्या पांच सौ से ज्यादा है, ऐसे में साधुओं की संख्या लगभग डेढ़ सौ ही क्यों?

उत्तर :- जैनदर्शन का एक सिद्धान्त यह है कि पुरुष थोड़े होते हैं और स्त्रियां ज्यादा होती हैं। जैन तत्त्व विद्या में कहा गया--सत्ताईस गुणा ज्यादा स्त्रियां होती हैं। सत्ताईस गुणा तो हमारे संघ में साधुओं की अपेक्षा साध्वियों की संख्या है ही नहीं। प्रसंगवश यह तो मैंने एक तात्विक बात बता दी।

दूसरी बात--ऐसा लगता है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों में त्याग-वैराग्य की वृत्ति कुछ ज्यादा होती है। संख्या की अधिकता का यह मुख्य कारण हो सकता है।

प्रश्न-४३ :- जैन धर्म और बौद्ध धर्म समकालीन हैं। संसार के अनेक देश बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, फिर जैनधर्म इतना व्यापक क्यों नहीं बन पाया?

उत्तर :- जैन धर्म उतना व्यापक नहीं बना, इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। पहली बात तो यह कि जैन मुनि प्रायः पदयात्रा करते हैं। इसलिए पैदल यात्रा करते हुए सुदूर दूसरे देशों में जाना उनके लिए कठिन रहता है। जब अन्य देशों में जैन साधु-संतों का जाना ही नहीं हो पाता तो प्रचार-प्रसार की ज्यादा संभावना कहां रहती है? प्रचार तो गृहस्थ लोग भी कर सकते हैं, किन्तु उनके प्रति जनमानस में इतनी श्रद्धा और आस्था नहीं होती, जितनी साधु-साध्वियों के प्रति। उनका अपना एक विशेष प्रभाव होता है।

गृहस्थ अपने धंधों में इतने रचे-पचे और व्यस्त रहते हैं कि धर्म-प्रचार के लिए पर्याप्त समय निकाल पाना उनके लिए कठिन होता है। जैन धर्म के व्यापक न हो पाने का यह भी एक कारण हो सकता है।

उदासीनता भी प्रचार-प्रसार की कमी का एक कारण हो सकता है। अपनी साधना में रत रहना, दूसरों से कोई सरोकार न रखना, प्रचार-प्रसार में रुचि न लेना, यह भी एक कारण हो सकता है।

प्रश्न-४४ :- एक जैनाचार्य होने के नाते क्या आप यह नहीं चाहते कि लाखों-लाखों लोग जैन बनें? अगर हां, तो इसके लिए आपके पास क्या कार्य योजना है?

उत्तर :- लाखों लोग जैन बनें, इसकी कोई कार्य योजना अभी स्पष्ट नहीं है। बड़ी संख्या में लोग जैन बनें, इसमें कोई आपत्ति वाली बात भी नहीं है। हमारा सामान्य रूप में इस दिशा में प्रयास चलता भी है। कोई इच्छुक होता है तो उसे हम जैन या तेरापंथी बनाते भी हैं और इसके लिए कुछ-कुछ सम्पर्क भी हमारे साधु-साध्वियां करते हैं। यहां मैं स्पष्ट कर दूं कि जैन बनाना एक बात है, वह भी एक पहलू है, लेकिन इसके साथ एक दूसरा पहलू है--गुडमैन बनाना। गुडमैन यानी अच्छा इंसान। अणुव्रत आन्दोलन का मूल उद्देश्य है आदमी को गुडमैन बनाना। कोई जैन बने, न बने, पर हमारे प्रयत्नों से अच्छा आदमी बन गया तो हमें एक प्रकार से संतोष की अनुभूति हो सकेगी। दूसरों को अच्छा इंसान बनाना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है और हम वह कार्य यथासंभव कर रहे हैं। आज कितने-कितने अजैन लोग भी अणुव्रत से संपृक्त हुए हैं, नशामुक्ति अभियान से जुड़े हैं और अपने जीवन में इंसानियत को पुष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।'

क्रमशः

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

नववर्ष प्रवेश पर उमड़े जन सैलाब ने सुना बृहत् मंगलपाठ

१ जनवरी २०१३। नववर्ष प्रवेश के अवसर पर देश के विभिन्न संभागों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दो दिन पूर्व ही बाड़मेर पहुंचने प्रारंभ हो गए। थार नगरी बाड़मेर में उमंग और उल्लास का प्रसंग बन गया कि इस अवसर पर एक महान धर्मगुरु का पावन सन्निध्य व प्रवास उन्हें प्राप्त हुआ था। पूज्य आचार्यप्रवर लगभग ७.२० बजे कार्यक्रम स्थल पर पधार गए। ठिठुरन भरी ठंड में भी पूरा पण्डाल खचाखच भरा हुआ था। अपने आराध्य का मंगल आशीर्वाद पाने व बृहत् मंगलपाठ श्रवण के लिए लोग समुत्सुक थे। मंगलमूर्ति परम पावन आचार्यप्रवर ने पावन मंत्रों का सामूहिक सस्वर पाठ किया, तत्पश्चात मंगलपाठ सुनाया। मंगलकामना करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'समय प्रतिपल बीतता रहता है, इसलिए हर व्यक्ति समय के प्रति सजग रहे और उसका पूरा उपयोग करे। संघीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी कार्यक्रम अब गति पकड़ रहा है। लाडनूं प्रवास में जन्मशताब्दी वर्ष शुरू हो रहा है। उस वर्ष के लिए हमने दो मुख्य लक्ष्य बनाए हैं। पहला लक्ष्य सौ मुनि दीक्षा का। यह हमारी मानसिक भावना है और यही सबसे बड़ा कार्यक्रम है। यह लक्ष्य हमें सन २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक हासिल कर लेना है। दूसरा कार्यक्रम अणुव्रत का है।' बीदासर में मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी, २८ नवम्बर २०१३ को घोषित दीक्षा समारोह के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'दीक्षा समारोह के बारे में मैं दो बातें और जोड़ना चाहता हूं। जंवरीमलजी बैंगानी व बीदासर के अन्य लोग आए हैं। जंवरीमलजी वयोवृद्ध श्रावक हैं। इनकी बात को बहुमान देते हुए कह रहा हूं, पहली बात--बीदासर में यथासंभव बृहत् दीक्षा समारोह करने का भाव है।

दूसरी बात--'सन २०१३-१४ में आयोज्य आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत दीक्षाओं की जो बात है, मेरी दृष्टि में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दीक्षा समारोह बीदासर में हो, यह भावना है। पूरे वर्ष का मुख्य दीक्षा समारोह परम प्रभु महावीर के दीक्षा दिवस (मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी) पर बीदासर में करने का भाव है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'शताब्दी वर्ष में लाडनूं के बाद हरियाणा जाना है। हरियाणा के काफी लोग यहां आए हुए हैं। हरियाणा में शताब्दी वर्ष का प्रोग्राम करना है। इसके साथ हरियाणा में अक्षय तृतीया के आयोजन का पहले ही कह दिया है। आज स्थान की भी घोषणा कर देता हूं। **द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अनुकूलता के साथ भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हुआ कहता हूं--सन २०१४ की अक्षय तृतीया समारोह सिरसा में करने का भाव है। इतना और कर देते हैं--वैशाख शुक्ला नवमी, दशमी तथा चतुर्दशी--इन तीन तिथियों में हरियाणा में रहने का भाव है। उसी वर्ष मनाया जाने वाला आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस (आषाढ़ कृष्णा तृतीया) कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण है। वह कार्यक्रम भारत की राजधानी दिल्ली में करने का भाव है।'**

उल्लेखनीय है--वैशाख शुक्ला नवमी को परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण का जन्मदिवस, दशमी को पदाभिषेक दिवस तथा चतुर्दशी को दीक्षा दिवस है। मंगलपाठ श्रवण के बाद गुरुदेव के चरणस्पर्श हेतु लंबी कतार लगी।

समय बड़ा बलवान

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'हर व्यक्ति चाहता है कि वह समय को सार्थक करे, किन्तु या तो वह इस बात को समझ नहीं पाता या इसे क्रियान्वित नहीं कर पाता। समय को सार्थक करना है तो हम स्वयं जागें और दूसरों को जगाएं। व्यक्ति संकल्प करे--मैं अच्छा काम करूंगा और उसके अनुरूप सत्पुरुषार्थ करूंगा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'जब भी नया वर्ष आता है व्यक्ति के मन में यह आशा जागती है कि नया वर्ष खुशियों की सौगात लेकर आएगा। सूर्योदय होता है तो अंधेरा मिटता है। हमारे भीतर भी कुछ अंधेरा है, जिसे कोई महापुरुष ही मिटा सकता है। आचार्यवर द्वारा प्रदत्त संकल्पों को जीवन में उतारें और अपने भीतर पसरे अंधेरे को दूर करने का प्रयास करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'पंडित व विवेकी समय को पहचानें और उसका मूल्यांकन करें। समय बहुत बलवान होता है। मेरा मानना है कि जो समय को बर्बाद करता है, वह स्वयं को बर्बाद कर लेता है। जो समय का सदुपयोग करता है, वह समय का अच्छा लाभ उठा लेता है। समय के साथ हम जैसा व्यवहार करते हैं, वैसी ही हमारी स्थिति निर्मित हो जाती है। दिन, माह और वर्ष बीतते हैं। उनकी जगह नया दिन, माह और वर्ष अपना आसन जमा लेता है। काल का स्वभाव है बीतना। अनंत समय बीत गया। बीता हुआ समय वापस नहीं आता। जो जवान थे, वे बूढ़े हो गए। जो जवानी बीत गई, वह वापस नहीं आती। जो अवस्था बीत गई, वह वापस नहीं आती। सन २०१२ व्यतीत हो गया। अनुभूति यह करें कि हमारे जीवनकाल का एक वर्ष कम हो गया।'

समय को सार्थक करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'समय को दुष्फल तो होने ही न दें। उसे निष्फल भी न होने दें, उसे सुफल बनाने का प्रयास करें। परीक्षा में फेल होने वाले एक विद्यार्थी को एक वर्ष का मूल्य समझ में आता है। इसी तरह अलग-अलग स्थितियों में मास, सप्ताह, दिन, घण्टा, मिनट, सेकेंड का मूल्य उन भोगे हुए लोगों से अवगत हो सकता है। आज नए वर्ष २०१३ का प्रारंभ हुआ है। समय प्रबंधन अच्छा हो। व्यक्ति की दिनचर्या सुव्यवस्थित हो, जिससे समय का सम्यक् उपयोग हो सके। आध्यात्मिक अनुष्ठान हेतु भी समय का नियोजन करें। समय हमारी प्रतीक्षा नहीं करता, इसलिए हम समय के प्रति जागरूक रहें। व्यर्थ की बातों में समय को बर्बाद न करें। समय को सार्थक व सुफल करना ही अभिलषणीय है।'

तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनि सागरमलजी 'श्रमण' की जीवनी 'ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया'

को तेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मर्यादाकुमार कोठारी ने आचार्यवर को भेंट की। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'मुनिश्री सागरमलजी स्वामी इतिहासविज्ञ मुनिप्रवर थे। उनमें कई विशेषताएं थीं। वे भाईजी महाराज चम्पालालजी स्वामी की सेवा में रहे। मुनि कुशलकुमारजी ने यह पुस्तक लिखी है। वे खूब विकास करते रहें।' कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी तथा समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आज बृहत् मंगलपाठ तथा प्रातःकालीन कार्यक्रम का पारस चैनल पर पूरे देश में सीधा प्रसारण हुआ। पारस चैनल की टीम एक दिन पूर्व ही यहां पहुंच गई थी। मध्याह्न में मुनि पुलकितकुमारजी के उपपात में सभा-संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का सम्मान कार्यक्रम रखा गया।

बाड़मेर के छहदिवसीय प्रवास में अनेकविध कार्यक्रम सुव्यवस्थित चले। प्रातः पूज्यवर के विषयबद्ध प्रवचनों से सबको दिशादर्शन मिला। मध्याह्न में गोष्ठी रूप में अनेक कार्यक्रम चले। रात्रि में पूर्व निर्णीत विषयों पर मुनि उदितकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी के विशेष वक्तव्य हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रमों का संचालन मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने किया। ३१ दिसम्बर को रात्रि में 'भजन सन्ध्या' का कार्यक्रम रहा, जिसमें मुख्यतः श्री नीलेश बाफना ने गीतों को प्रस्तुति दी।

बाड़मेर सिटी में श्रद्धा के लगभग सत्तर घर हैं, जो १४५ चौकों में विभक्त हैं। इनमें लगभग छप्पन परिवार ऐसे हैं, जहां बायतू की तेरापंथी बहनों की शादी अन्य संप्रदायों में हुई है। कुछ कठिनाइयों के बीच भी उन्होंने अपनी श्रद्धा की प्रगाढ़ता का परिचय दिया। आज भी उन बहनों के कारण उनके प्रायः परिवार काफी अनुकूल हैं। इस प्रवास में सभी परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर पारिवारिक परिचय प्राप्त करने के साथ-साथ पावन प्रेरणा भी प्रदान करते, फलस्वरूप पारिवारिक सदस्य विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान करते। इस कार्य में मुनि जितेन्द्रकुमारजी सहयोगी रहे। बाड़मेर में पूज्य आचार्यवर का प्रवास प्रतापजी की पोल स्थित तेरापंथ भवन में हुआ। प्रवचन स्थल श्री नेमचन्दजी गोलेच्छा के स्थान पर रहा। बाड़मेर जैन नगरी है, जहां मुख्य रूप से मूर्तिपूजक समुदाय का बाहुल्य है। सभी जैन समाज के लोगों ने आचार्यवर के प्रवास का पूरा लाभ उठाने का प्रयास किया। पूज्यवर के इस प्रवास का पूरे शहर में अच्छा प्रभाव रहा। प्रातः व रात्रि में संपन्न कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण स्थानीय चैनल पर हुआ।

बाड़मेर से मंगल विहार

२ जनवरी। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः छहदिवसीय प्रवास के पश्चात् बाड़मेर के तेरापंथ भवन से मंगल प्रस्थान किया। कृतज्ञ बाड़मेरवासी अपने आराध्य के प्रति मंगलभाव अर्पित कर रहे थे। पूज्यप्रवर मार्ग में श्री तनसिंहजी चौहान के आवास पर पधारे। चौहान परिवार पूज्यवर की इस अनुकंपा से हर्षविभोर और आह्लादित था। यहां कुछ क्षण विराजमान होकर परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। लगभग सात किमी. के विहार के उपरान्त जूना अखाड़ा के स्वामी प्रतापपुरीजी की प्रार्थना पर आचार्यवर मार्ग से कुछ भीतर स्थित शिवशक्ति धाम में पधारे। स्वामी प्रतापपुरीजी ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत करते हुए धाम के विषय में अवगति दी।

लगभग तेरह किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर उत्तरलाई पधारे। बड़ी संख्या में गांववासियों ने आचार्यवर की श्रद्धासिक्त अगवानी की। यहां पूज्यवर का प्रवास श्री लूणाराम माली के आवास पर हुआ। मात्र कुछ दिनों के अन्तराल में आचार्यवर का पुनरागमन और प्रवास माली परिवार के लिए अतिशय हर्ष की अनुभूति करानेवाला था।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज पौष

कृष्णा पंचमी है। परमपूज्य एवं परम उपकारी गुरुदेव आचार्य तुलसी का दीक्षा दिवस है। जीवन के बारहवें वर्ष में उन्होंने संयम जीवन स्वीकार किया था। वह एक ऐसा संतरत्न हुआ, जो बड़े संत समुदाय का भी स्वामी बना। जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है, संतता का प्राप्त होना। विरल व्यक्ति ही संत जीवन स्वीकार कर सकते हैं। साधुत्व को स्वीकार करते समय भीतर में धर्म और अध्यात्म के प्रति विशेष श्रद्धाभाव होना चाहिए। तात्कालिक दुःखों से मुक्ति के लिए संत बन जाना अलग बात होती है और आत्मकल्याण के विशेष उद्देश्य से साधुत्व को स्वीकार करना विशेष बात होती है। आचार्य तुलसी बहुत छोटी अवस्था में साधु बन गए। परमपूज्य कालूगणी जैसे महान गुरु की छत्रछाया उन्हें प्राप्त हुई थी। उन्होंने बालावस्था और तरुणावस्था में ही कितना विकास कर लिया। छोटी अवस्था में ही उनका प्रभाव तेरापंथ धर्मसंघ और कालूगणी के मन में पुष्ट हो गया था। गुरु के मन में विश्वास का पुष्ट होना अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात होती है। उनका पूर्वार्जित भाग्य भी प्रबल था। मेरा मानना है कि उन्होंने पूर्वजन्म में कोई साधना की थी, उसके फलस्वरूप उन्हें तेरापंथ शासन के नेतृत्व का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस जन्म का सत्पुरुषार्थ तो साथ में जुड़ा हुआ था ही।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'जनता के नैतिक उत्थान के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत के सन्देश को लेकर वे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री आदि से मिले तो आम जनता को भी उन्होंने यह सन्देश दिया। उनके जीवन में बाह्य और आन्तरिक, दोनों प्रकार के संघर्ष आए। विरोध के विभिन्न रूप उनके सामने आए। संघर्षों में आत्मबल बनाए रखना महापुरुषत्व का लक्षण होता है। आचार्य तुलसी ने जैन वाङ्मय की भी सेवा की। जैन आगमों के अनुवादन व संपादन का कार्य उनके वाचनाप्रमुखत्व में हुआ। उन्होंने तेरापंथ शासन, जैन शासन और मानव जाति की सेवा की। बीसवीं सदी के उस महापुरुष का आज वार्षिक दीक्षा दिवस है। इस पावन अवसर पर हम परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।'

आज मध्याह्न में बाल मुनियों सहित अनेक संत उत्तरलाई स्थित भारतीय वायुसेना के हवाई अड्डे का अवलोकन करने गए। रात्रि में उत्तरलाई स्थित भारतीय वायुसेना के चीफ ऑपरेशन कमाण्डर श्री के. के.दुबे पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए और पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

एक बार पुनः कवास में

३ जनवरी। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः ग्यारह किमी. का विहार कर कवास पधारे। सन २०१२ के अन्तिम सप्ताह में पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने कवास में सन २०१३ के प्रथम सप्ताह में आचार्यवर का पुनरागमन श्रद्धालुओं के हर्षोल्लास को द्विगुणित करने वाला था। पूज्यप्रवर का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री रमेश बैदमेहता, श्री ओमप्रकाश बैदमेहता, श्री अरिहंत छाजेड़, श्री महावीर छाजेड़, श्री पवन ढेलड़िया, श्रीमती प्रफुल्लादेवी चौपड़ा एवं श्रीमती धीरजदेवी छाजेड़ ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। समणी मानसप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि में अपने आराध्य की पुनः अभिवंदना की। श्री भंवरलाल गोलेच्छा एवं श्री पारसमल सालेचा ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इस दुनिया में सुख और दुःख दोनों हैं। जन्म, मृत्यु, बीमारी, बुढ़ापा आदि को दुःख कहा गया है। कर्म दुःख के कारण हैं। पाप कर्मों के उदय के कारण व्यक्ति दुःखी बनता है। राग-द्वेष के भाव कर्म के बीज कहे गए हैं। इन्हीं के कारण प्राणी पाप कर्म का बंध करता है। अध्यात्म की साधना है कि व्यक्ति राग-द्वेष के मध्य होकर समतापूर्वक जीने का

अभ्यास करे। राग-द्वेष के बिना कोई क्षण बीतता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति पाप कर्म के बंधन से मुक्त है। राग-द्वेष नहीं रहे तो व्यक्ति दुःखमुक्त बन जाएगा। दुःखमुक्ति का उपाय है राग-द्वेष से मुक्त रहने का अभ्यास।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'गृहस्थ जीवन में भी राग-द्वेष को कम करने का अभ्यास करना चाहिए। गृहस्थ भी बहुत ऊंची साधना कर सकता है। उसे पंक में रहते हुए भी कमल की भांति अलिप्त रहने का अभ्यास करना चाहिए। गार्हस्थ्य में भी त्याग-संयम का अभ्यास करना चाहिए। इच्छा परिमाण, स्वदार संतोष, सामायिक, रात्रि भोजन परिहार आदि के द्वारा त्याग-संयम का अभ्यास किया जा सकता है। त्याग-संयम परिपुष्ट होता है तो राग-द्वेष के संस्कार कृश हो सकेंगे। राग-द्वेष के संस्कार कमजोर पड़ेंगे तो दुःख भी कम हो सकेगा। मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि जो परलोक में मेरे साथ जाएगा, उसे मैंने ग्रहण किया या नहीं? यदि धर्म का पाथेय साथ में नहीं तो अगली गति में दुःख भोगना पड़ सकता है। अहिंसा और प्रामाणिकतापूर्ण व्यवहार, संयम की साधना, जप, तप, स्वाध्याय आदि धार्मिक साधना होती रहे तो धर्म का पाथेय अर्जित होता है। धार्मिक पाथेय अर्जित करने वाला प्राणी परलोक में सुखी रह सकता है।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

अभिशाप है अज्ञान और मोह

४ जनवरी। परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रातः कवास से बारह किमी. का विहार कर भगाणियों की ढाणी पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय प्राथमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धार्मिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा प्राप्त होती है। अनंत-अनंत आत्माएं मोक्ष को प्राप्त हो चुकी हैं और अनंत-अनंत आत्माएं भविष्य में मोक्ष को प्राप्त होंगी। मोक्ष का वैशिष्ट्य है कि वहां एकान्त सुख ही होता है, दुःख नहीं होता। ऐसा सुख जो परम पवित्र होता है। पदार्थों से प्राप्त होने वाला सुख वहां नहीं होता। बाह्य सुख-सुविधाएं शरीर को चाहिए और मोक्ष में शरीर नहीं होता। मोक्ष के मुक्त जीव अशरीरी होते हैं। उनके वाणी और मन भी नहीं होते, केवल चेतना होती है। मोक्ष प्राप्ति से पूर्व सर्वज्ञता का उद्घाटित होना आवश्यक होता है। अज्ञान और मोह नष्ट होने पर सर्वज्ञान प्राप्त होता है। अज्ञान दुःख और अभिशाप होता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'मोहनीय कर्म आठ कर्मों का राजा है। जब तक भीतर में मोह अवस्थित रहता है, अज्ञान पूर्णतया नष्ट नहीं हो सकता। जिस आत्मा में राग-द्वेष क्षीण हो जाते हैं, उसमें मोह की सत्ता रह नहीं सकती। व्यक्ति को साधना के द्वारा राग-द्वेष को प्रतनु बनाने का प्रयास करना चाहिए। ज्यों-ज्यों राग-द्वेष प्रतनु होगा, भीतर का सुख स्वतः प्रकट होने लगेगा।'

बायतू में भव्य स्वागत

५ जनवरी। महातपस्वी परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः भगाणियों की ढाणी से बारह किमी. विहार कर बायतू पधारे। लगभग दस वर्षों के बाद अपने आराध्य का पावन पदार्पण बायतू के श्रद्धालुओं के उत्साह को चरम पर ले जाने वाला था। बड़ी संख्या में आबालवृद्ध पूज्यवर की अगवानी कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। बुलन्द जयघोष श्रद्धालुओं की आन्तरिक भावना को अभिव्यक्ति दे रहे थे। पूरे गांव में अलौकिक वातावरण बना हुआ था। बाड़मेर चौराहा से प्रारंभ स्वागत जुलूस पुराना गांव, बायतू बाजार, रेलवे क्रासिंग, चिमनजी बाजार, आचार्य महाप्रज्ञ मार्ग होते हुए तेरापंथ भवन में पहुंच कर विशाल स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया। आचार्यवर का छहदिवसीय प्रवास इसी भवन में हुआ। लावासरदारगढ़ चतुर्मास परिसंपन्न

करने वाली बायतू की साध्वी राकेशकुमारीजी आदि साध्वियों ने मार्ग में पूज्यवर के दर्शन किए।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ कन्यामंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री नेमीचन्द छाजेड़ ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तेयुप और महिला मंडल द्वारा पृथक्-पृथक् स्वागत गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुति दी गई। बायतू पंचायत समिति के प्रधान श्री सिमरथारामजी, पूर्व सरपंच श्री मालारामजी तथा जिला भाजपा महामंत्री श्री कैलाशजी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

बायतू विधायक कर्नल सोनाराम चौधरी ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य में कहा--'मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि गत कई दिनों से हमारे क्षेत्र में पूज्य आचार्यश्री की यात्रा हो रही है। आपके प्रवचन का प्रभाव जनता में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है।'

बाड़मेर के विधायक श्री मेवाराम जैन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान संत अपने भ्रमण के द्वारा इस जिले की धरा को पावन कर रहे हैं। इस कड़ी ठंड में जन-जन का उद्धार कर रहे हैं।'

बाड़मेर के सांसद श्री हरीश चौधरी ने कहा--'अपने पैतृक गांव में आपका स्वागत कर मैं स्वयं को धन्य महसूस कर रहा हूं। आप जिस तरह स्वयं कष्ट उठाकर लोगों को नैतिकता का सन्देश दे रहे हैं, उससे निश्चित रूप में लोगों में बदलाव आएगा।'

राजस्थान सरकार के राजस्व मंत्री श्री हेमाराम चौधरी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण बाड़मेर के ग्रामीण क्षेत्रों में गांव-गांव पधार कर लोगों का आध्यात्मिक मार्गदर्शन कर रहे हैं। बायतूवासी इस धर्म-गंगा में स्नान कर स्वयं को कृतपुण्य बनाएं।'

साध्वी ज्ञानयशाजी, साध्वी धवलप्रभाजी, साध्वी राकेशकुमारीजी, मुमुक्षु इन्द्रा भंसाली एवं मुनि रजनीशकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि पर परमपूज्य गुरुदेव के स्वागत में भावभीनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में निर्धारित विषय 'मानव जीवन का शृंगार नैतिकता' की विवेचना करते हुए कहा--'हमारी दुनिया में अनेक शक्तियां हैं। उनमें एक है नैतिकता की शक्ति। जिसका व्यवहार नैतिकता से परिपूर्ण होता है, मानना चाहिए कि उस व्यक्ति में शक्ति का प्रस्फुटन हुआ है। नैतिकता के मार्ग पर चलने के लिए संकल्प अपेक्षित होता है। छोटी-मोटी कठिनाइयों की परवाह न करते हुए नैतिकता के पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिए। न्याय पथ पर अडिग रहने का साहस, संकल्प और निष्ठा हो तो जीवन में नैतिकता अवतरित होती है। यदि नैतिकता जीवन में आ गई तो मानव जीवन संवर जाता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'मनुष्य जीवन का एक आभूषण है कर्तव्यनिष्ठा। व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे। कर्तव्य बड़े स्तर का है या छोटे स्तर का, यह महत्त्वपूर्ण नहीं होता। उसके प्रति निष्ठा और जागरूकता विशेष बात होती है। व्यक्ति जिस कार्य के लिए नियुक्त है, उसकी गरिमा रखना महत्त्वपूर्ण होता है। यदि कर्तव्यनिष्ठा जीवन में आ जाती है तो मानना चाहिए कि नैतिकता जीवन में आई है। अवगुणों की दुर्गन्ध को निकाल कर जीवन को संयम और नैतिकता के द्वारा सुरभित बनाने का प्रयास करना चाहिए।'

बायतू आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम बायतू आए हैं। यहां के अनेक साधु-साध्वियां हैं। यहां की साध्वी राकेशकुमारीजी को हमने मेवाड़ से बुला लिया। ये विचरण करने वाली साध्वी हैं। स्वास्थ्य को ध्यान में रखती हुई खूब अच्छा काम करती रहें। साध्वी धवलप्रभाजी साध्वी कमलश्रीजी के साथ हैं। खूब अच्छी सेवा, साधना का क्रम चलता रहे। साध्वी ज्ञानयशा नई साध्वी है। पहले समणी के रूप में रही, अब साध्वी है। खूब अच्छा विकास और अच्छी साधना करती रहे। साध्वी मार्दवयशा वैसे तो भीमड़ा की है। यह भी खूब अच्छी साधना करती रहे। मुनि रजनीशकुमारजी बायतू के हैं। इन्होंने

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की सेवा की। गुरुदेव की रात्रि सेवा में ये नियुक्त थे। उन्हें उदक अरोगाने का कार्य भी करते थे, यह बड़ी सेवा है। साधुओं की गोचरी व्यवस्था में भी इनका योगदान रहता है। साधुओं की चिकित्सा व्यवस्था के कार्य में नियुक्त अनेक साधुओं में ये भी एक हैं। इसमें भी ये अच्छी सेवा दे रहे हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी की यात्रा के दौरान उनके साधन संचालन में अनेक साधुओं के साथ इनका भी योगदान रहता था। ये केवल सेवा ही नहीं करते, चिन्तनशील भी हैं, अध्ययन भी किया है। बी.ए. और एम.ए. किया, अब पी.एच.डी. में संलग्न हैं। परमपूज्य गुरुदेव के बाद अब हमें उदक पिलाने का कार्य कर रहे हैं। यह बहुत जिम्मेदारी का कार्य है। इतनी सेवा करना अपने आप में जीवन की एक उपलब्धि है। हमारे संघ की प्रशासनिक व्यवस्था का एक कार्य, जो हमारे पुराने संत किया करते थे, उसे अभी मुनि रजनीशकुमारजी कर रहे हैं। मर्यादा महोत्सव के दिनों में जब मुझे साधुओं से बातचीत करनी होती है तो मैं इन्हें भेजकर बुलाता हूं। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम को उठाने, आगे बढ़ाने एवं व्यवस्थित करने में इनका बहुत श्रम रहा है। यदि मैं अतिशयोक्ति न करूं तो तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के महल-निर्माण में एक नींव का पत्थर मुनि रजनीशकुमारजी हैं। इस प्रकार ये विविध रूपों में सेवा दे रहे हैं। निष्ठा और जागरूकता के साथ खूब अच्छी सेवा कर रहे हैं और करते रहें।'

धार्मिक होता है श्रद्धालु, व्रती और आराधक

६ जनवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'धर्म करने वाला पदार्थ का भोग करता है, पर उसमें आसक्त नहीं होता। धार्मिक अपने भीतर के परम को प्रकट करे। हमारे ऊपर जब तक पदार्थ हावी है, तब तक परम प्रकट नहीं हो सकता। व्यक्ति किसी भी कार्य में संलग्न हो, पर वह धर्म को न भूले।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'धर्म और धार्मिक' विषय पर अपना मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'धार्मिक वही हो सकता है, जिसके जीवन में धर्म है। धर्मविहीन कभी धार्मिक नहीं हो सकता। धार्मिक व्यक्तियों में भी अन्तर होता है। धार्मिक गृहस्थों की तीन श्रेणियां हैं--श्रद्धालु, व्रती एवं आराधक। श्रद्धालु धार्मिक का संतों से अनुराग होता है। वह साधुओं को दान देगा। वह सोचेगा--मेरे घर के द्वार से कोई खाली न जाए। तात्विक भाषा में वह सुलभबोधि श्रावक होता है। व्रती धार्मिक के जीवन में व्रत का विकास होता है। वह बारह व्रतों को धारण करता है। वह किसी भी प्रकार के नशे से विरत रहता है। आराधक धार्मिक अपने अवशिष्ट जीवन को आराधना-साधना में नियोजित कर देता है। अवस्था प्राप्त होने पर वह व्यवसाय आदि से मुक्त हो जाता है। हर धार्मिक अपने जीवन को धर्म से अनुप्राणित करे।'

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मुनि मोहनलालजी स्वामी 'आमेट' का बायतू क्षेत्र के साथ भावात्मक संबंध था। वैसे यह उनकी जन्मभूमि नहीं है, कर्मभूमि है। हमने देखा, उनमें तेरापंथ के बारे में लोगों को बताने, स्वामीजी के सिद्धान्तों को समझाने में गहरी रुचि थी। संघ के सदस्यों को संभालने व तत्त्व समझाने में वे कुशल थे। वे योग्य मुनि थे। आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में स्वीकार किया। वे जल्दी चले गए। बायतू की बाइयां आज भी उन्हें याद करती हैं। उनकी जो संघनिष्ठा देखी, वह महत्त्वपूर्ण थी। मर्यादा महोत्सव व अन्य प्रसंगों पर वे अच्छा गीत बनाया करते थे। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के समय वे कई बार गुरुकुलवास में रहे। उन्हें कई संत फकीर कहते थे। मैं उन्हें बायतू में याद कर रहा हूं। मुनिश्री मोहनलालजी स्वामी का थोड़ा अंश, रूप व झलक मुनि जिनेशकुमारजी में देखता हूं।'

व्यापारी सम्मेलन

मध्याह्न में पूज्यप्रवर की सन्निधि में व्यापारी सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न वर्गों के स्थानीय व्यापारियों के साथ यहां के प्रवासी व्यापारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। मुनि राजकुमारजी के गीत के बाद मुनि उदितकुमारजी एवं मुनि रजनीशकुमारजी के वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'व्यापार एक प्रकार की सेवा है। व्यापारी अपनी सेवा से धनोपार्जन करता है। सेवा व लाभ के बीच संतुलन बना रहे, यह अपेक्षित है। व्यक्ति के जीवन में इंसानियत होनी चाहिए। व्यापारी में करुणा की भावना हो, न्यायपूर्ण व्यवहार हो, अन्याय न हो और व्यापार में शुद्धि रहे।'

आचार्यवर ने व्यापारी अणुव्रत की अवगति देते हुए बेमेल मिलावट नहीं करने व तोलमाप में कमी नहीं करने का संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया। उपस्थित प्रायः सभी व्यापारियों ने खड़े होकर आचार्यवर से नियम स्वीकार किया। रात्रि में भजन सन्ध्या का कार्यक्रम रहा। श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने अपने गीतों से समां बांधा। श्री राहुल बालड़ ने भी गीत प्रस्तुत किया। उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस

७ जनवरी। पौष कृष्णा दशमी। भगवान पार्श्व का जन्मकल्याणक दिवस। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में भगवान पार्श्व को सभी दर्शन व परंपराओं के लोगों द्वारा वंदनीय व पूजनीय बताया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'लोगस्स के पाठ में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की गई है। यह स्वयं में एक प्रभावी पाठ है। सभी तीर्थंकर अनंत ज्ञानसंपन्न थे। इन चौबीस में उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ को जैन श्वेताम्बर परम्परा में स्त्री तीर्थंकर के रूप में स्वीकार किया है। एक अवसर्पिणी या उत्सर्पिणी में तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं, जबकि महाविदेह क्षेत्र के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है। भगवान पार्श्व तेईसवें तीर्थंकर थे। उनका प्रभाव अप्रतिहत था। उनके मंत्र व मन्दिर ज्यादा हैं। जैन परंपरा में दो विचारधाराएं हैं। एक विचारधारा ने मूर्तिपूजा को महत्त्व दिया, जबकि दूसरी विचारधारा ने नहीं दिया। श्वेताम्बर परंपरा में दोनों विचारधाराएं हैं। तेरापंथ परंपरा ने मूर्तिपूजा को नहीं माना। वह भावपूजा में विश्वास करती है। लोग पार्श्व के मंत्रों का जप करते हैं। यदि आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्त हैं तो समाधि की स्थिति प्राप्त हो जाती है। आध्यात्मिक दृष्टि से मंत्रों का प्रयोग करना आत्मोत्थान का कारण बनता है। आत्मनिर्मलता से आगे की गति भी अच्छी होती है। पार्श्व जैसे वीतराग आत्मा के स्तवन से हमारी आत्मा की पवित्रता व विशुद्धि बढ़ती है।'

प्रसंगवश आचार्यवर ने कहा--'ज्ञात हुआ कि बायतू के दिवंगत राणमलजी बुरड़ अच्छे जिम्मेदार श्रावक थे। उनके घर में गुरुदेव का प्रवास भी हुआ था। उनकी पुत्री साध्वी राकेशकुमारीजी संघ को सेवा दे रही हैं। उनके गांव में हम उन्हें याद करते हैं।'

कांकरोली निवासी सक्रिय कार्यकर्ता श्री गणेशलाल कच्छारा के सुपुत्र नवनीत कच्छारा का मात्र सैंतीस वर्ष की उम्र में नववर्ष प्रारंभ से पूर्व हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। शोकसंतप्त कच्छारा, चोरड़िया व संघवी परिवारों को आध्यात्मिक संबल प्रदान करते हुए आचार्यवर ने पूरे परिवार को धैर्य और मनोबल बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि राजकुमारजी ने पार्श्व स्तवना में गीत प्रस्तुत किए। बालोतरा के तपस्वी श्री बाबूलाल ढेलड़िया देवता ने आज उनचालीस की तपस्या में सैंतालीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें नगर के विभिन्न विद्यालयों के लगभग डेढ़ हजार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही। मुनि विजयकुमारजी के गीत संगान के बाद मुनि योगेशकुमारजी ने विद्यार्थियों के बीच जीवनविज्ञान के प्रयोग करवाए। मुनि दिनेशकुमारजी का वक्तव्य हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन के पश्चात् उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि रजनीशकुमारजी ने किया।

सफलता व सुफलता का मंत्र है विवेकपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ

८ जनवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'मनुष्य का जीवन बहुआयामी है। कर्मशील मनुष्य के जीवन में विकास और ह्रास, दोनों होता है। जीवन में पुरुषार्थ नहीं तो वह विकास नहीं कर सकता। व्यक्ति सुविधावाद को छोड़े और सही दिशा में श्रम का नियोजन करे।'

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'सफलता के सूत्र' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सफलता का महत्त्वपूर्ण सूत्र है विवेकपूर्ण सम्यक पुरुषार्थ। हमारे जीवन में विवेक का मूल्य है। जिसके पास विवेक है, मानों उसे निर्मल चक्षु व अन्तर्नेत्र प्राप्त है। विवेकशून्य व्यक्ति अपराध व हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है। विवेक को धर्म कहा गया है। विवेकपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ सफलता व सुफलता का अच्छा मंत्र है। इससे गुणों का विकास स्वतः होने लगता है। आदमी सद्‌गुणरूपी मोतियों के भण्डार को अपने जीवन में भरने का प्रयास करे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति में सचाई, प्रामाणिकता व अनुकंपा की चेतना जागे। वह सब प्राणियों को अपने समान समझे। जीवन में ऋजुता, समता व निश्छलता का विकास हो। ऋजुता के आसेवन से प्रभुता का पथ प्रशस्त होता है। व्यक्ति भाग्यवाद में न उलझे, वह मात्र नियति के भरोसे भी न बैठे, न ही ज्योतिष, हस्तरेखा आदि में उलझे। जीवन में सद्‌गुणों के विकास के लिए विवेकपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ अपेक्षित है।' कार्यक्रम में मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्रावक सम्मेलन

मध्याह्न में बायतू के निवासी व प्रवासी भाई-बहनों का श्रावक सम्मेलन आयोजित हुआ। मुनि अनेकान्तकुमारजी के गीत संगान के पश्चात् मुनि दिनेशकुमारजी का वक्तव्य हुआ। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में श्रावक पद की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए सत्पुरुषार्थ करने का आह्वान किया। पूज्य आचार्यवर ने 'श्रावक' शब्द की मीमांसा करते हुए सबको श्रद्धाशील, विवेकशील व क्रियावान बनने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि रजनीशकुमारजी ने किया।

आज रात्रि में काव्य सन्ध्या का आयोजन हुआ। मुनि विजयकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, मुनि विवेककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी, मुनि प्रतीककुमारजी, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल, श्री ताराचन्द भंसाली ने अपने काव्य स्वरों को प्रस्तुति दी। संचालन श्री प्रमोद भंसाली (बायतू) ने किया।

सुधार कर पढ़ें

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण की एक अत्यन्त लोकप्रिय कृति है--महात्मा महाप्रज्ञ। इस पुस्तक में उल्लिखित कतिपय सन् और संवत आदि का संशोधित रूप इस प्रकार पढ़ा जाए--

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 12-1-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	उल्लिखित	संशोधित
११६	१०	वि.सं.२०३६	वि.सं.२०३५
१३३	१०	वि.सं.२०५१	वि.सं.२०५०
१७३	३	सन १६०८, १६०६	सन २००८, २००६
१७३	४	सन १६०६, १६१०	सन २००६, २०१०
१६६	४	वि.सं.२०४	वि.सं.२०४२-४३
२०८	१८	माघ शुक्ला पंचमी	माघ शुक्ला सप्तमी

पूज्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणा

१० जनवरी। पूज्य आचार्यश्री ने घोषणा की है--द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता रही और यदि मैं बाड़मेर जिले में कभी मर्यादा महोत्सव करूंगा तो पहला मर्यादा महोत्सव बायतू में करने का भाव है।'

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- अणुव्रतसेवी उपासक श्री डालचन्दजी कोठारी (रीछेड़) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ(स्वर्णजयंती) पर पूज्यप्रवर द्वारा उन्हें 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' एवं 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र एवं पुत्रवधू विनोद-विमला, भरत-नीतू, सुपौत्र जिज्ञासु, मोक्ष, पुण्य एवं सुपौत्री विरक्ति कोठारी, दादर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व.श्री बजरंगलालजी आंचलिया (रतनगढ़-जयपुर) की पुण्यस्मृति में उनके भ्राता भरतकुमार, मंगलचन्द, सुपुत्र प्रवीण, अनन्त, आदित्य, रवि, ऋषभ एवं समस्त आंचलिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के 'शहर' गांव में पदार्पण के उपलक्ष्य में कोठारी किशनीरामजी चुन्नीलालजी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक रावतमलजी, गणपतलालजी, उत्सव, श्रद्धानिष्ठ श्रावक महेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार तातेड़ परिवार, जसोल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री धनराजजी ओस्तवाल को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' व श्रीमती कमलादेवी ओस्तवाल को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में श्रीमती शांतिदेवी-राणमलजी, अनिता-संदीप, अमिता-सुनील, कृतज्ञ, असमी, रिमशा ओस्तवाल परिवार, बालोतरा (राज.) द्वारा प्रदत्त।

शासनश्री साध्वी सोहनांजी (छापर) समाधिमरण को संप्राप्त

सुनाम (पंजाब) में प्रवासित शासनश्री साध्वी सोहनांजी (छापर) ७ जनवरी २०१३ को तिविहार अनशन के बाईसवें दिन तथा चौविहार अनशन के आठवें दिन समाधिमरण को संप्राप्त हो गई। उनके विषय में आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**